असली
दस बीबियों की
कहानी
عُبَید غوثؔ وخواجہ، رضؔا وکُل اولیاء
محمّد جمال الدّین خان قادری رضوی
ضلع بہرائچ شریف یو. پی. الہند
موبائل نمبر : ← 7860520899
मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची
ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

786/92

असली
दस बीबियों की कहानी

मौलाना सिराजुल क़ादरी
बहराइची
9870742302
silicon.computer786@gmail.com

नाशिर : ग़ाज़ी किताब घर साबिरी यतीम ख़ानह , जामिअह सरकरे आला हज़रत गंगवल बाज़ार , ज़िला बहराइच शरीफ़, यू-पी(इंडिया)

जुमलह हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब : असली दस बीबियों की कहानी

लेखक : मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

कंप्यूज़िंग : Silicon Computer

9833 7070 24

सने इशाअत : २०१० ई./ १४३१ हि.

तादाद : १०००

हदियह :

मिलने के पते

न्यु सिलवर बुक ऐजेन्सी, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
नाज बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
इक़रा बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
बुक सिटी, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
मकतबह क़ादिरयह, मस्जिद क़रतबह जो गेश्वरी वेस्ट
कुतुब ख़ानह अमजदियह, देहली
लतीफ़ियह बुक डिपो, नागपुर
रहीमियह बुक डिपो, कलकत्तह
नय्यर बुक सेलर, इलाहाबाद
मंसूर बुक सेलर, दरगाह शरीफ़ बहराइच
ग़ाज़ी बुक डिपो, दरगाह रोड बख़्शी पुरा, बहराइच
जमील बुक डिपो,घनटा घर बहराइच
फ़लाही बुक डिपो, वाराणसी
नसीम बुक डिपो, वाराणसी
हनीफ़ बुक डिपो, नागपुर
ताज बुक डिपो, नागपुर

फ़हरिस्त : अस़्ली दस बीबियों की कहानी

 मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची

मोबाइल नम्बर : +919870742302

क्र.सं.	नाम	सफ़्ह़:

अल्लाह की नेक बन्दियां رَضِیَ اللّٰہُ عَنہُنَّ

عُبَیْدِ غوثؓ وخواجہ، رَضَاؔ وَکُل اَولِیَاء
مُحَمَّدْ جَمَالُ الدِّیْنْ خَانْ قَادِرِی رَضْوِی
ضِلَعْ بَہرَائِچ شَرِیْف یُوْ. پِیْ. اَلْہِنْدْ
مُوْبَائِل نَمبَر : ← 7860520899

Presented by: https://jafrilibrary.com

इंतिसाब

जिगर गोशए रसूल, ज़ोहरा बुतूल,जन्नती औरतों की सरदार जिनके तवील सजदे रात की पहनाइयाँ समेट देते थे यअनी हज़रत सैयदह फ़ातिमह रज़ि यल्लाहु अन्हा की देहलीज़ पर एक गदाए बेनवा की दसतक इस उम्मीद के साथ कि ख़ान्दानी रिवायात के मुताबिक़ कासए गदाई में करम का टुकड़ा ज़रूर आयेगा ।

गर क़ुबूल उफ़तद ज़हे इज़्जो शर्फ़ ग़ुबारे राहे आले रसूल

सिराजुल क़ादरी बहराइची

मुक़द्दमह

पाकीज़ह ख़सलतें,ततहीरे क़ुलूब, नेक इन्सान का असली जौहर होते हैं, तअलीम व तदरीस तरबियत और वअज़ व नसीहत को क़ुबूल करने के लिए ज़रूरी है कि इन्सान **क़द अफ़लहा मन तज़क्का** का मिसदाक़ हो जाये, तहरीर पर तहरीर नामुमकिन ठीक इसी तरह ज़ंग आलूद दिलों की सैक़ल से क़ब्ल आमाजगाहे इश्क़ और नग़मए तौहीद की हुब्बे सराई नामुमकिन है क्योंकि संग दिल और ग़लीज़ क़ुलूब व अज़हान रखने वालों की बहुत सी मिसालें तारीख़ में मौजूद हैं कि फ़ारान की चोटी से बलंद होने वाली सदाये दिलनवाज़ सुनने के बअद सलीमुल फ़ितरत हज़रात बग़ैर क़ील व क़ाल दामने तौहीद में दाख़िल हो जाते हैं मगर कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के सामने तमाम तर मोअजिज़ात और सैयदुल मुरसलीन की तबलीग़े सई होने के बावजूद उनके ज़ंग आलूद क़ुलूब हक़्क़ानी गुफ़तगू सुनने के लिए तैयार न हो सके, नग़मए तौहीद और कलामे रब्बानी सुनकर दाख़िले इस्लाम होने वाली जमाअत में सहाबए किराम के साथ सहाबियात भी शामिल हैं और उनके इलावह बहुत सी ऐसी इस्लामी ख़्वातीन के अहवाल व कवाइफ़ तारीख़ी हवालों से पढ़े जा सकते हैं जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सह बल्कि पूरी ज़िन्दगी इस्लाम की हिमायत व नुसरत और इबादते इलाही में गुज़ार दी जिन

की ज़िन्दगी हमारी क़ौम की औरतों के लिए मिशअले राह है असली सैयदह बीवी की कहानी के बअद मुसलसल मुझ हक़ीर पर दबाव डाला गया कि दस बीवी की कहानियों के मुक़ाबले में असली दस बीबियों की कहानी भी लिखिए ताकि दुख़्तराने इस्लाम बजाये उस किताब के पढ़ने के जिसके मुसन्निफ़ और मुरत्तिब का नाम व निशान नहीं और ग़लत तरीक़े से उसे लिखकर पूरी दुनिया में तक़सीम करके गुमराह किया जारहा है असली दस बीबियों की कहानियाँ पढ़कर इस्तिफ़ादह हासिल कर सकें।

हमारे असलाफ़ अपने मुश्किल मुआमिलात के हल के लिए बुज़ुरगों को वसीलह बनाते और उनसे मदद तलब करते रहे जिसकी शरई हैसियत कितावों में मौजूद है जिसका इन्कार ग़ैर मुमकिन है, तवौ हुम परस्ती के इस नाज़ुक दौर में ख़ास कर यूपी, बिहार के देही इलाक़ों में अगर यह किताबें पहुंचा दी जायें तो यक़ीनन किसी हद तक क़ौमे मुस्लिम के बच्चे और बच्चियाँ व औरतें पढ़कर व सुनकर अपने आप को इस्लामी माहौल में ढालने की कोशिश करेंगी और ग़ैर मोअतबर कितावें फ़रज़ी कहानियाँ पढ़ने सुनने से अपने को बचालेंगी मैं अपनी जमाअत से दरख़्वास्त करता हूँ कि अगर यह किताबचह किसी लाइक़ हो तो इसकी ताईद फ़रमाकर आम करने की तरग़ीब फ़रमायें और अगर क़ाबिले तवज्जोह न हो तो ख़ुदही इसका बदल तहरीर फ़रमाकर अस्ल वाक़िआत से रूशनास करायें और दुख़्तराने इस्लाम को लग़ो और फ़रज़ी कहानियाँ पढ़ने और सुनने से बचायें अल्लाह तबारक व तआला की बारगाह में दुआ करता हूँ कि उन नेक बीबियों के सदक़े मे हम सबका ख़ातिमह बख़ैर फ़रमाये (आमीन)

गदाए कूदए मस्ऊदे ग़ाज़ी **सिराजुल क़ादरी बहराइची**

१५/रबीउल अव्वल शरीफ़ १४३१हि. २/मार्च २०१० ई.

कहानी पढ़ने का तरीक़ह

☆ बेहतर यह है कि पढ़ने और सुनने वाले सब के सब बावज़ू हों।

☆ कहानी शुरूअ करने से पहले क़ुरआन मजीद की कोई सूरत तिलावत कीजिए अगरचेह सूरेह फ़ातिहा क्यों न हो।

☆ तिलावत के बअद बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में नअत शरीफ़ का गुलदस्तह पेश कीजिए पूरी नअत याद न हो तो दो एक शेअर जो भी याद हो तरन्नुम या तहत में हुसूले बरकत के लिए ज़रूर पढ़ा जाये।

☆ **दस बीबियों की कहानियाँ** कई सफ़हात पर फैली हुई हैं अगर एक मजलिस में पढ़ने का मौक़अ न हो तो तीन या पाँच या दस दिनों में तक़सीम करके ख़त्म किया जाये फ़ज़ीलत और सवाब में कोई कमी वाक़ेअ न होगी बल्कि इस तरीक़े से कई बार ज़िक्र की महफ़िल में बैठने का मौक़अ मिल जायेगा।

☆ कहानी ख़त्म करने के बअद बारगाहे रसूले अनाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में सलातो सलाम का नज़रानह पेश करें और इसी किताब के आख़िर में जो तरीक़ए फ़ातिहा लिखा है उसके मुताबिक़ आजिज़ी व इन्किसारी से अल्लाह तआला की बारगाह में दसों बीबियों के वसीले से दुआ माँगी जाये इन्शाअल्लाह तबारक वतआला ज़रूर मुराद पूरी होगी, अहेल व अयाल बलाओं से महफ़ूज़ रहेंगे, बीमारियों से शिफ़ा हासिल होगी, घर में ख़ैर व बरकत का नुज़ूल होगा, ज़िन्दगी पुरसुकून गुज़रे गी, ख़ुसूसन जिस मक़सद के लिए कहानी पढ़ी या सुनी जायेगी उस मक़सद में कामयाबी ज़रूर बज़रूर मिलेगी।

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिँव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिँव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।**

(१) हज़रते सैयदह ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा

नाम : ख़दीजह, लक़ब ताहिरह वालिद का नाम ख़ुवेल्द बिन असद और वालिदह का नाम फ़ातिमह बिन्ते ज़ाइदह था आपकी

विलादत ५५६ई. या ५५५ई. को मक्कह में हुई थी वालिदैन क़ुरैशियुन्नस्ल थे इस तरह सैयदह ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा रईसुत्तरफ़ैन थीं, और आपका शजरए नसब रसूले ग्रामी वक़ार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शजरए पाक से जा मिलता है। वालिदे ग्रामी ख़ुवेल्द बिन असद बहुत बड़े ताजिर थे और क़बाइले अरब में बड़ी बा अज़मत और पुर वक़ार शख़्सियत के मालिक थे। दयानतदारी, रास्त बाज़ी की वजह से तमाम अहले क़ुरेश में बहुत ही मोहतरम और हर दिल अज़ीज़ थे सैयदह ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा भी कम उमरी से निहायत रोशन ख़्याल, बाहिम्मत और शरीफ़ुन्नफ़्स ख़ातून थीं।

सबसे पहली शादी अबू हालह नबाश बिन ज़ेरारह तैमी से हुई जिनसे दो लड़के पैदा हुए एक का नाम हालह था जो ज़मानए जाहिलिय्यत में ही इंतिक़ाल कर गये दूसरे का नाम हुन्द था जो कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाब में शामिल हुए और जंगे जुमल में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नुसरत व हिमायत में लड़ते हुए शहीद हुए। नबाश के इंतिक़ाल के बअद हज़रत ख़दीजह रज़ियल्लाहु अनहुमा अतीक़ बिन आइज़ मख़ज़ूमी की निकाह में दाख़िल हुईं और उनसे एक लड़की पैदा हुई।

आख़िर में हज़रत सैयदह ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा को नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजियत का शर्फ़ हासिल हुवा इस से पहले मक्कह के बड़े बड़े ताजिरों और सरदारों ने निकाह के पैग़ामात दिए जिसे आप ठुकराती रहीं वालिदे ग्रामी के इंतिक़ाल के बअद हज़रत ख़दीजह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने तमाम कारोबार व तिजारत को बेहतरीन तरीक़ह से जारी ही नहीं रख्खा बल्कि शाम व यमन में बड़े पैमाने पर चलाने के लिए एक बहुत बड़ा अमलह भी रख्खा जो अरबों, यहूदियों और ईसायी नौकरों और ग़ुलामों पर मुशतमिल था हुस्ने तदबीर और दयानतदारी की वजह से कारोबार में रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी होती रही, मगर तमाम तर आराम के बावजूद आप का दिल मुतमइन न था।

एक ऐसे सिद्क़ व सफ़ा और अमानत के पैकर की तलाश थी जो भरोसे मंद भी हो और ज़हीन व हुशयार भी हो जिसे तिजारती क़ाफ़िले के साथ दूसरे मुल्कों में भेजा जा सके ।

यह वह ज़मानह था जब आफ़ताबे रिसालत तुलूअ हो चुका था और आपकी उम्रे मुबारक २५ साल की थी। लेकिन आपके पाकीज़ह अख़्लाक़ और सच्चाई व अमानतदारी का चरचह अरब के

क़बीलों के घर घर फैल चुकी थी और अरब के लोग आपको अमीन व सादिक़ के लक़ब से याद करते थे। हज़रत ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ूबियों से मुतअस्सिर होकर पैग़ाम भेजा कि आप मेरा सामाने तिजारत मुल्के शाम तक लेजाया करें तो दूसरों के बनिस्बत ज़्यादह मुआविज़ह दूँगी चुनाँचह आप यह पैग़ाम मंज़ूर फ़रमा कर माले तिजारत लेकर रवानह हो जाते हैं। सैयदह ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा अपने ग़ुलाम मैसरह को भी क़ाफ़िलह के साथ रवानह कर देती हैं ताकि दौराने सफ़र पेश आने वाले वाक़िआत व हालात की जानकारी हो सके हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दयानतदारी की वजह से पूरा माले तिजारत दूगनी मुनाफ़अ पर फ़रोख़्त होगया। शाहराहे मक्कह से बाज़ारे बसरह तक जो लोग शरीके कारवाँ थे उनके साथ इस क़द्र उमदह सुलूक किया कि हर एक हमराही आप का मद्दाह और शैदाई होगया। क़ाफ़िले की वापसी पर हज़रत ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने ग़ुलाम मैसरह के ज़बानी दौराने सफ़र पेश आने वाले वाक़िआत को बड़े ग़ौर से सुनती हैं कि मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह जब चलते थे तो बादल का एक टुकड़ा उनपर सायह किए रहता और साथ साथ चलता, सूखे दरख़्त के नीचे ठहर जाते तो वह दरख़्त हरा भरा हो जाता, अजीब व ग़रीब वाक़िआत सुनकर बेसाख़्तह कह उठती हैं कि यह हाशमी नौजवान वही नबीए आख़िरुज़्ज़माँ हैं जिनकी आमद की बशारतें पैग़ंबरों ने दी हैं और किताबों में जिनकी ख़ूबियों का ज़िक्र है, सैयदह ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक बार एक ख़्वाब देखा था कि आसमान से एक चाँद उनकी आग़ोश में आकर गिरा था जिससे मक्कह ही नहीं सारा आलम मुनौवर हो गया, एक ईसाई आलिम से जब इस ख़्वाब की तअबीर पूछती हैं तो उसने जवाब दिया था कि ऐ ख़दीजह तुम्हें बशारत हो कि आलमे गीती के संवरने का वक़्त आगया है ऐ अरब की नेक ख़ातून वह हादिए अकबर, रसूले आज़म इस ख़ाकदाने गीती पर तशरीफ़ ला चुके हैं जिनकी बरकत से ज़ुल्म, दग़ा. फ़रेब, बेदीनी ख़त्म होजायेगी और सुनो तुम्हें उनकी ज़ौजियत में दाख़िल होने का पहला शर्फ़ हासिल होगा हज़रत ख़दीजह ख़्वाब की तअबीर सुनकर मचल उठती हैं दिल की दुनिया में इन्क़लाब आजाता है और अपनी लौंडी नफ़ीसह के ज़रीअह पैग़ामे निकाह भेजती हैं और दोनों ख़ान्दान के अकाबिरीन की मौजूदगी में आक़ाए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में हज़रत ख़दीजह दाख़िल हो जाती हैं।

उस वक़्त हज़रत ख़दीजह की उम्र ४०साल थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उमरे मुबारकह २५साल थी, जिस तरह हज़रत ख़दीजह को ज़ौजियत का अव्वलीन शर्फ़ हासिल हुवा ठीक उसी तरह दाख़िले इस्लाम होने वाली औरतों में सब से पहले इस्लाम लाने का शर्फ़ भी हासिल हुवा हिजरत से तीन साल क़ब्ल २ रमज़ानुल मुबारक को ६५ साल की उम्र में आपका विसाल हुवा और मक्कह के क़बरिस्तान में दफ़्न की गईं।

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।**

(२) हज़रते सैयदह आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

नाम आइशह : लक़ब सिद्दीक़ह, कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह ख़याल रहे कि यह कुन्नियत आप ने अपने जलीलुलक़द्र भांजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के नाम की निसबत से इख़्तियार फ़रमाया क्योंकि आपकी कोई औलाद न थी और उस ज़माने में कुन्नियत अरबों में शराफ़त का निशान समझा जाता था आक़ाए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आइशह की ख़्वाहिश पर इस नाम की कुन्नियत तजवीज़ फ़रमाई।

हज़रत आइशह यारे ग़ारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत सिद्दीक़े अकबर बिन अबी क़हाफ़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शाहज़ादी थीं वालिदह का नाम उम्मे रूमान बिन्ते आमिर था आपकी विलादत बिअसत से चार साल बअद माहे शव्वाल में हुई बचपन सैयदुना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी के सायए पिदरी में गुज़रा। शुरूअ ही से ज़हीन और होशमंद थीं। बचपन में एक मरतबह आप गुड़ियों से खेल रही थीं कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके क़रीब से गुज़रे हज़रत आइशह के गुड़ियों में एक परदार घोड़ा था सरकार ने इरशाद फ़रमाया आइशह यह क्या है जवाब दिया घोड़ा है हुज़ूर ने फ़रमाया घोड़ों के पर कहाँ होते हैं आपने बरजस्तह जवाब दिया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत सुलेमान

अलैहिस्सलाम के घोड़ों के पर थे प्यारे आक़ा मुस्कुराने लगे और आपकी अक़्ल व होश की तअरीफ़ करने लगे। कुछ दिनों के बअद ख़ूलह बिन्ते हकीम की तहरीक पर सरकार ने अबू बकर सिद्दीक़ को आइशह के लिए पैग़ामे निकाह भेजा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए इस से बढ़कर ख़ुशी और क्या हो सकती थी कि उनकी बाहया इफ़्तफ़ शिआर साहिबज़ादी दोनों आलम के ताजदार के निकाह में दाख़िल हो। फ़ौरन राज़ी हो गए। छे साल की उम्र में हिजरत से तीन साल क़ब्ल माहे शव्वाल में हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु अन्हा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निकाह में आईं हज़रत अबू बकर ने ख़ुद ही निकाह पढ़ाया और पाँच सो दिरहम हक़्क़े महेर मुक़र्रर फ़रमाया। यह निकाह बड़ी सादगी के साथ हुवा हज़रत आइशह फ़रमाती हैं जब मेरा निकाह हुवा तो मैं अपनी सहेलियों के साथ खेला करती थी मुझे इस निकाह का हाल तक मअलूम न हो सका यहाँ तककि मेरी वालिदह ने मुझे घर से बाहर निकलने में पाबंदी लगा दी।

निकाह के तीन साल बअद हिजरत का वाक़िअह पेश आया। मदीनह मुनौवरह पहुँचकर सरकार और सिद्दीक़े अकबर ने ज़ैद बिन हारिसह, अबू राफ़ेअ अब्दुल्लाह बिन अरीक़त को अपने अहेल व अयाल को लाने के लिए मक्कह भेजा जिनके हमराह दोनों ख़ान्दान के अफ़राद मदीनह पहुँच गए मदीनह पहुँचकर हज़रत आइशह मुहल्लह बनू हारिस में अपने वालिदे मोहतरम के घर उतरीं उन दिनों मदीनह की आबो हवा में तुरशी थी जो मुहाजिरीन के मिज़ाज के मवाफ़िक़ न आई कई सहाबह बीमार होगए यहाँ तककि सिद्दीक़े अकबर सख़्त बीमार होगए चुनांचह उनकी सिहत याबी के बअद हज़रत आइशह सिद्दीक़ह ख़ुद बीमार हो गईं मर्ज़ का हमलह इस क़द्र सख़्त था कि सर के बाल गिर गए, जब सिहत बहाल हुई तो एक दिन सिद्दीक़े अकबर ने हज़रत आइशह की रुख़सती का तज़किरह सरकारे दो आलम से किया जिसे हुज़ूर ने मंज़ूर फ़रमा लिया और शव्वाल १ हिजरी में हज़रत आइशह की रुख़सती अमल में आई उस वक़्त उनकी उम्र ९/ या १२/ साल की थी। हज़रत आइशह सब्र व रज़ा की पैकर थीं बड़ी बाहिम्मत व शुजाअत वाली थीं मैदाने जंग में उम्मे सुलेम के साथ दौड़ दौड़ कर ज़ख़्मियों को पानी पिला रही थीं। क़ुव्वते हाफ़िज़ह का यह आलम था कि बचपन के दिनों की सारी बातें याद थीं। सब्र व इस्तिक़ामत का यह आलम था कि वाक़िअए उफ़क में बुहतान व इलज़ाम तराशी में शामिल होने वाले

वअज़ हज़रात सहाबह में से थे जिन में हज़रत हस्सान बिन साबित भी मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़िक़त के शिकार हो गए मगर यह कहकर दरगुज़र फ़रमाया कि हस्सान बिन साबित रसूलुल्लाह की तरफ़ से मुश्रिकीन को जवाब देते थे यह शाइरे दरबारे रसूले मोहतरम हैं वाक़िअए उफ़्क इस तरह है कि गज़वए बनी मुसतलक़ के सफ़र से वापसी पर मुजाहिदीन के क़ाफ़िले ने एक मक़ाम पर पड़ाव किया हज़रत आइशह क़ज़ाए हाजत के लिए दूर निकल गईं न जाने कैसे उनके गले का हार टूटकर गिर गया और यह हार अपनी बहेन असमा से माँग कर लाई थीं हार के गुम होने से परेशान हो गईं और तलाश करने की ग़र्ज़ से उसी तरफ़ पलट गईं लेकिन जब हार तलाश करके वापस आईं तो क़ाफ़िलह रवानह होचुका था बहुत घबराईं और चादरे मुबारकह ओढ़कर वहीं ठहर गईं।

हज़रत सफ़वान बिन मोअतल नामी सहाबी ज़रूरी इंतिज़ामात की ग़र्ज़ से पीछे रह गए थे हज़रत आइशह उन्हीं के हमराह दोपहर के वक़्त क़ाफ़िले में पहुँचती हैं। रुसवाए ज़ामनह मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबै ने अपने साथियों के साथ यह मशहूर कर दिया कि सैयदह आइशह मआज़अल्लाह बाइसमत न रहीं। नाहक़ की इस रुसवाई और बदनामी से बीमार होगईं रब्बे क़दीर ने हज़रत आइशह के मुतअल्लिक़ आयते बरअत का नुज़ूल फ़रमाया, कि जब तुमने यह सुना तो मोमिन मरदों और मुसलमान औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता और कहते कि यह खुला बुहतान है (पा.१८, अन्नूर आयत १२) इस आयते करीमह के नुज़ूल के बअद मुनाफ़िक़ों के मुंह सियाह हो गए जो मुसलमान ग़लत फ़ैहमी का शिकार हुए थे सख़्त शरमिंदह हुए और आजिज़ी व इन्किसारी से अपनी ख़ताओं की तलाफ़ी चाही हज़रत आइशह का सर फ़ख़्र से ऊँचा हो गया रब के हुज़ूर सर बसुजूद हो गईं बअदे विसाले मुस्तफ़ा १७रमज़ानुल मुबारक ५८हि. में बउम्र ६३साल विसाल हुवा सब से ज़्यादह अहादीस आप से मरवी हैं मुश्किल से मुश्किल तरीन मसाइल के हल के लिए सहाबए किराम हाज़िर होते और आप उसे हल फ़रमाती थीं अल्लाह तआला हमारी क़ौम की औरतों को हज़रत आइशह के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये आमीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम)

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम**

अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।

(३) हज़रते सैयदह फ़ातिमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

नाम फ़ातिमह, लक़ब ज़ोहरा व बुतूल है सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादियों में सब से छोटी लेकिन सब से ज़्यादह प्यारी और लाडली हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ इकतालीस वर्स की थी तो पैदा हुईं या एलाने नुबव्वत से एक साल क़ब्ल या एलाने नुबुव्वत से पाँच साल पहले और ख़ानए कअबह की तामीर हो रही थी ।

मशहूर रिवायत के मुताबिक़ १८ साल और बअज़ रिवायतों के मुताबिक़ साढ़े पन्दरह साल की उम्र २ हिजरी में उनका निकाह शेरे ख़ुदा अलीए मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हुआ और आप की महेर जिस पर आप का निकाह हुआ चार सो मिस्क़ाल यानी एक सो पचास तोला चांदी।

आप का जहेज़ :- शहनशाहे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी प्यारी और लाडली बेटी को जो जहेज़ दिया वह बान की एक चार पायी थी और चमड़े का एक गद्दा जिस मे रुई की जगह खुजूर के पत्ते भरे हुए थे और एक छागुल , एक मशक दो चक्कियाँ और मिट्टी के दो घड़े शादी से पहले हज़रते अली रज़ियल्लाहु अन्हु , हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौलत कदह पर रहते थे मगर अब घर की ज़रुरत पेश आयी तो हज़रते हारिसह बिन नोअमना अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना एक मकान उनको दे दिया । जब हज़रते फ़ातिमह रज़ियल्लाहु अन्हा अपने नये घर में आयीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके यहाँ तशरीफ़ ले गये। और दरवाज़ह पर खड़े होकर इजाज़त तलब की फ़िर अन्दर गये एक बरतन में पानी मंगवा कर दोनों हाथ उस में डाला और वह पानी हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सीना और बाज़ू पर छिड़का फ़िर हज़रते फ़ातिमह ज़ोहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बुला कर उन पर छिड़का और फ़रमाया कि मेरे ख़ानदान में जो शख़्स सब से बेहतर है मैंने उस के साथ तुम्हारा निकाह किया है।

आप की घरेलू ज़िन्दगी

शहंशाहे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी होने के बावजूद हज़रत सैयदह फ़ातिमह रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर का काम काज ख़ुद करती थीं, झाड़ू अपने हाथ से देती थीं खाना पकाती थीं बल्कि चक्की भी अपने हाथ से पीसती थीं और मशक में पानी भरकर लाया करती थीं जिस से हाथ पर छाले और बदन पर घट्ठे पड़ गए थे। एक बार माले ग़नीमत में कुछ बांदी और ग़ुलाम आये हुए थे, आप ने डरते डरते आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से घरेलू कारोबार के लिए एक लौंडी माँगी और हाथ के छाले किखाये तो हुज़ूर ने फ़रमाया जाने पिदर ! बद्र के यतीम बच्चे तुम से पहले इसके मुस्तहक़ हैं और एक रिवायत में यूँ है कि आप ने ग़ुलाम तलब किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया बख़ुदा ऐसा नहीं हो सकता कि मैं तुम्हें ग़ुलाम आता करूँ और अहले सुफ़्फ़ह भूक की वजह से अपने पेट पर पत्थर बांध रहे हों।

आप के फ़ज़ाइल

हज़रत सैयदह फ़ातिमह ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के फ़ज़ाइल में बेशुमार हदीसें वारिद हैं चंद मुलाहिज़ह फ़रमायें।

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : फ़ातिमह मेरे गोश्त का एक टुकड़ा है तो जिस शख़्स ने उसे ग़ज़बनाक किया उसने मुझे ग़ज़बनाक किया और एक रिवायत में है कि नाराज़ करती हैं मुझको हर वह चीज़ जो फ़ातिमह को नाराज़ करती है और तक्लीफ़ देती है मुझको वह चीज़ जो फ़ातिमह को तक्लीफ़ देती है लिहाज़ा जिसने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआल अन्हु को ज़हेर दिया और जिन लोगों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को करबला के रेगिस्तान में शहीद किया। उन लोगों ने बेशक हज़रत फ़ातिमह को और हुज़ूर को तक्लीफ़ दी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तक्लीफ़ देना या नाराज़ करना अल्लाह तआला को तक्लीफ़ देना और उसकी नाराज़गी मोल लेना है।

हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि क़यामत के दिन एक निदा करने वाला अर्श से निदा करेगा, ऐ मैहशर वालो ! अपने सरों को झुकालो और अपनी आँखों को बंद कर लो कि फ़ातिमह बिंते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पुल सरात से गुज़र जायें। तो हज़रत सैयदह फ़ातिमह रज़ियल्लाहु अन्हा सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में बिजली कौंदने की तरह पुल सिरात से गुज़र जायेंगी। हज़रत फ़ातिमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़ुसूसियत

यह भी है कि कभी आपको हैज़ नहीं आता था, जब उनके यहाँ बच्चह पैदा होता तो एक घड़ी के बअद निफ़ास से पाक हो जातीं यहाँ तक कि उनकी नमाज़ क़ज़ा न होती। इसी लिए उनका नाम ज़ोहरा रख्खा गया, जब उनका विसाल हो गया तो हस्बे वसीय्यत हज़रते अस्मा बिन्ते उमेस रज़ियल्लाहु तआल अन्हा ने ग़ुस्ल दिया और हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआल अन्हु ने दफ़्न किया हज़रते सैयदह फ़ातिमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की तजहीज़ व तक्फ़ीन में एक ख़ास क़िस्म की जिद्दत की गई इस लिए कि उस ज़मानह में रवाज था कि मरदों की तरह औरतों का जनाज़ह भी बे परदह निकाला जाता था मगर हज़रत सैयदह के मिज़ाजे अक़दस में चूँकि इंतिहाई शर्म व हया थी इस लिए उन्होंने वफ़ात से क़ब्ल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी हज़रत असमा बिंते उमैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि खुले हुए जनाज़ह में औरतों की बे परदगी होती है जिसे मैं नापसंद करती हूँ तो उन्होंने लकड़ियों का एक गहवारा बनाया जिसे देखकर आप बहुत ख़ुश हुईं औरतों के जनाज़ह पर जो आज कल परदह लगाने का दस्तूर है इसकी इब्तिदा आप ही से हुई। आप का विसाल ३रमज़ानुल मुबारक ११हि. बरोज़ मंगल की रात में हुवा। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपकी नमाज़े जनाज़ह पढ़ाई और जन्नतुलबक़ी शरीफ़ में मदफ़ून हुईं। ख़ुदा उनकी तुरबत पर रहमत व नूर के फूल बरसाये।

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।**

(४) उम्मुल मोमिनीन हज़रते सैयदह हफ़सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

सैयदुना फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नूरे चश्म हज़रत हफ़सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बड़ी आबिदह, ज़ाहिदह, क़ारियह, अदीबह, साफ़ गो, ख़ातून थीं ग़ज़वए बद्र में आप के सात रिश्तहदार शरीक हुए हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि अज़वाजे मुतह्हरात में से

सिर्फ़ हफ़सह ही एक ऐसी ख़ुश नसीब ख़ातून थीं जो कभी कभार मेरे मक़ाबले में आजाती थीं सैयदुना फ़ारूक़े आज़म की तरबियत में पलकर जवान होने वाली क़ाबिले सद एहतराम ख़ातून की ज़िन्दगी का तज़किरह मुस्लिम ख़वातीन के लिए एक रोशन और जगमगाती शमअ की तरह है जिससे हर ख़ातून तारीक माहौल में भी सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न हो सकती हैं।

हज़रत हफ़सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जब होश संभाला तो अपने घरमें इस्लामी माहोल की चमक देखी अपने अब्बा जान को इस्लाम का परचार करते देखा, चचा, मामूँ, फूफी सभी लोग इस्लामी रंग में रंगे जा चुके थे जब यह जवान हुईं तो उनका निकाह ख़ुनेस बिन हुज़ाफ़ह सहमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कर दिया गया जो सैयदुना हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तबलीग़ से मुतअस्सिर होकर इस्लाम क़बूल कर चुके थे। कुछ अर्से के बअद दरबारे रिसालत से मदीनह मुनव्वरह की तरफ़ हिजरत कर जाने का हुक्म मिला हज़रत हफ़सह अपने शौहर के साथ हिजरत की सआदत हासिल करती हैं मदीनह मुनव्वरह में रिफ़ाअह बिन अब्दुल मुंजिर ने मियाँ बीवी का इस्तिक़बाल करते हुए इज़्ज़त व एहतराम के साथ अपने घर में ठहराया बअद में अबू उमैस अंसारी के दरमियान मवाख़ात का रिश्तह क़ाइम हुवा और दरबारे रिसालत की जानिब से दोनों सहाबी इस रिश्ते पर बहुत ख़ुश हुए गज़वए बद्र के मअरकह में हज़रत हफ़सह के शौहर शदीद ज़ख़्मी हो जाते हैं आख़िरकार कुछ दिनों में अल्लाह तआला ने उन्हें शहादत का बलंद रुतबह अता फ़रमाया और वह अल्लाह के प्यारे हो गए हज़रत हफ़सह के लिए यह बहुत बड़ा सदमह था लेकिन अल्लाह तआला की रज़ा को पेशे नज़र रखते हुए सब्र व ज़ब्त का मुज़ाहिरह किया और अल्लाह तआला की इबादत में मशग़ूल हो गईं उस वक़्त उनकी उम्र सिर्फ़ १८ बर्स थी सैयदुना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बेटी के बारे में बहुत फ़िक्र मंद रहते थे। बेटी के चेहरे पर नेकी, तक़्वा के रोशन आसार के साथ बेबगी की कड़वी परछाइयाँ दिली परेशानी का बाइस बन रही थीं। बड़ी सोच विचार के बअद हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए आप ने हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वफ़ात पर अफ़सोस का इज़हार किया और साथ ही यह इरशाद फ़रमाया कि अगर आप चाहें तो मेरी बेटी हफ़सह से निकाह फ़रमा लें, हज़रत सैयदुना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निगाहें झुक गईं कुछ देर सोचने के

बअद कहा मुझे कुछ सोचने की मुहलत दीजिए कुछ दिन गुज़र जाने के बअद दोबारह उनसे मिले तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरा अभी शादी करने का इरादह नहीं मायूस होकर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गए आप भी मुस्कुराकर ख़ामाश होगए उसके बअद दरे रसूल अलैहिस्सलाम पर हाज़िर होकर सूरते हाल से आगाह करते हैं। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कुराते हुए इरशाद फ़रमाते हैं उमर घबराओ नहीं, ग़म न करो, परेशान न हो, हफ़सह से शादी वह करेगा जो उसमान से बेहतर है और उसमान की शादी उससे होगी जो हफ़सह से बेहतर है। शाहे उमम की ज़बाने मुबारक से यह बात सुनकर फ़ारूक़े आज़म ख़ुश भी हुए और हैरान भी अलग़र्ज़ कुछ अर्से के बअद सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद हफ़सह से शादी की ख़्वाहिश का इज़हार फ़रमाया हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुशी से झूम उठे कि मेरी बेटी मुस्तफ़ा के आँगन की रौनक़ बनेगी चुनाँचह रसूले अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हफ़सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को ३ हिजरी में ग़ज़वए उहद से पहले निकाह में दाख़िल फ़रमाया, उस वक़्त हज़रत हफ़सह की उम्र तक़रीबन २०साल थी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी बेटी को यह कहते हुए रुख़सत किया जा अपने सरताज के घर जो दोनों आलम का ताजदार है बेटा तेरे तो भाग जाग उठे तू बड़ी ख़ुश किस्मत है, तेरे नसीब अच्छे हैं सदा ख़ुश रहो, आबाद रहो, तेरे आंगन में ख़ुशियों के फूल हमेशह खिले रहें।

हज़रत हफ़सह रज़ियल्लाहु अन्हा उम्मुल मोमिनीन बनने के बअद इल्मे दीन हासिल करने की तरफ़ राग़िब हुईं, क़ुरआने हकीम की जो आयात वही के ज़रीअे नाज़िल होतीं उन्हें सुनकर ज़बानी याद कर लेतीं हुज़ूर के ज़बाने अक़दस से जो अल्फ़ाज़ निकलते उन्हें पूरी तवज्जोह से सुनतीं और दिल में महफ़ूज़ कर लेतीं अक्सर व बेशतर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दीनी, शरई सवालात करतीं आप गुफ़्तगू में बड़ी तेज़ थीं। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मुझे उम्मे मुबश्शिर रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि एक रोज़ मैं हज़रत हफ़सह के पास बैठी थी, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे आप ने इरशाद फ़रमाया कि जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअते रिज़वान में हिस्सह लिया है वह सब जन्नती हैं उनमें से कोई भी जहन्नम में न जायेगा। हज़रत हफ़सह ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कैसे हो सकता

है ? आप यह सुनकर गुस्से में आगए और हज़रत हफ़सह को डांट दिया, हज़रत हफ़सह ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला का इरशाद है **व इम्मिनकुम इल्ला वारिदुहा,** तुम में कोई ऐसा नहीं जिसका गुज़र दोज़ख़ पर न हो। सरकार ने क़ुरआने हकीम की यह आयत पढ़ी **सुम्मा नुनज्जिल लज़ीनत्तक़ौ वनज़रुज़्ज़ालिमीना फ़ीहा,** फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मअलूम हुवा तो हज़रत हफ़सह को डांटते हुए कहा तुझे मअलूम होना चाहिए कि जिनके साथ तू इस तरह के सवालात करती है वह अल्लाह के महबूब और मक़बूल पैग़म्बर हैं हमेशह अदब व एहतराम, इताअत गुज़ारी और सलीक़ह शिआारी को मलहूज़े ख़ातिर रखना इस तंबीह के बअद कभी शिकायत का मौक़अ न मिला उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सह रज़ियल्लाहु अन्हा ने ४५ हिजरी को ६० साल की उम्र में दाइये अजल को लब्बेक कहा वफ़ात के वक़्त भी उनका रोज़ह था नमाज़े जनाज़ह मदीने के गवरनर मरवान बिन हिकम ने पढ़ाई और जन्नतुल बक़ी में सपुर्दे ख़ाक हुईं।

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव् व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातंव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।**

(५) हज़रते उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रते उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा ने जज़ीरए अरब के इलाक़ए सुरात में परवरिश पाई बाप का नाम आमिर था जवान हुईं तो अपने क़बीले के नौजवान अब्दुल्लाह बिन हारिस से शादी हुई। एक बेटा पैदा हुवा जिसका नाम तुफ़ैल बिन अब्दुल्लाह रखा गया। अब्दुल्लाह बिन हारिस ने मक्कह में मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार करली। यहाँ आबाद होकर वह हज़रते अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के हलीफ़ बन गए थोड़े ही अर्से के बअद इंतिक़ाल हो गया। बीवी और बेटा बे यार व मददगार हो गए हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन नाज़ुक हालात को देखते हुए उम्मे रूमान से शादी करली तो माँ बेटे के ख़ुशहाली के दिन लौट आये अपने घर के आंगन में ज़िंदगी के दिन आराम से गुज़रने लगे उन्हीं के बतन से हज़रते अब्दुर्रहमान व हज़रते आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु अन्हा पैदा हुए। हज़रते उम्मे रूमान ने बिल्कुल

इब्तिदाई मरहले ही में इस्लाम क़ुबूल कर लिया था उनके इस्लाम लाने का वाक़िअह यूँ पेश आया कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हलक़ह बगोश इस्लाम होकर अपने घरमें दाख़िल होते हैं तो क़दम रखते ही अपनी बीवी उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा को सूरते हाल से आगाह करते हुए इस्लाम की दअवत दी जिसे सुनते ही इस तरह क़ुबूल करती हैं जैसे पहले ही से यह सआदते दारैन हासिल करने के लिए तैयार बैठी हों, उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा को आक़ाए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशदामन (सास) होने का शर्फ़ हासिल हुवा जिसे वह अपने लिए सबसे बड़ा एज़ाज़ समझती थीं, सब्र व तहम्मुल का पैकर होने के बावजूद जब किसी मुसलमान पर कुफ़्फ़ाराने मक्कह को ज़ुल्म ढाते देखतीं तो तड़प उठतीं लेकिन अपने अज़ीम शौहर यारे ग़ारे मुस्तफ़ा को देखतीं कि वह फ़रज़न्दाने तौहीद के लिए ईसार व क़ुरबानी के क़ाबिले रश्क मिसाल क़ायम कर रहे हैं तो दिल को तसल्ली हो जाती।

ज़्यादह वक़्त अल्लाह तआला की इबादत में गुज़ारतीं अपने शौहर की इस्लाम के लिए ख़िदमात देखकर दिली इतमीनान का इज़हार करतीं, जब आक़ाए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत का हुक्म हुवा तो आप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ लाये और सफ़र की तैयारी का हुक्म दिया तो उन्होंने ज़ादे सफ़र के लिए घरमें जो नक़दी मौजूद थी वह साथ लेली बीवी बच्चे और बूढ़े बाप को अल्लाह के सपुर्द करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह एक अंदेखी मंज़िल की तरफ़ रवानह हो गए। हज़रत उम्मे रूमान के लिए यह बड़े सख़्त दिन थे, ख़ाविंद की जुदाई, घरेलू अख़राजात के लिए माली तंगी मगर इन सबके बावजूद उनके दिल में सिर्फ़ यही तमन्ना थी कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके ख़ाविंद अम्न व सलामती के साथ मंज़िले मक़सूद तक पहुँच जायें। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीनह मुनव्वरह पहुंचने के बअद ज़ैद बिन हारिसह और अबू बिन राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भेजा ताकि अहले ख़ानह को ले आयें हज़रत उम्मे रूमान और उनकी लाडली बेटी सैयदह आइशह सिद्दीक़ह एक ऊँट पर सवार होकर रवानह हुईं रास्ते में ऊँट ने बेक़ाबू होकर उछलना कूदना शुरूअ कर दिया हज़रत उम्मे रूमान सूरते हाल देखकर बहुत ज़्यादह घबरा गईं उन्हें अपनी जान की परवाह न थी अगर फ़िक्र थी तो सैयदह आइशह सिद्दीक़ह की चुनांचह अपनी प्यारी बेटी की बालयें लेते हुए हाय मेरी प्यारी बेटी हाय प्यारी दुल्हन जैसे अलफ़ाज़ बलंद आवाज़ से कहने लगीं इतने में किसी ने आवाज़ दी कि ऊँट की नकील छोड़ दीजिए जब ऊँट की नकील छोड़ दी तो सुकून से खड़ा हो गया और माँ बेटी ख़तरे से बच गईं।

मदीनह मुनव्वरह पहुँचकर उस घर में क़याम किया जो अबू

बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने अहले ख़ानह के लिए तैयार किया था हज़रत आइशह सिद्दीक़ह की रूख़सती ग़ज़वए बद्र के बअद माहे शव्वाल में इसी घर से हुई हज़रत उम्मे रूमान ने अपनी लाडली बेटी के उम्मुल मोमिनीन का एज़ाज़ हासिल करने पर इंतिहाई मसर्रत व शादमानी का इज़हार किया। इस से बढ़कर वालिदैन के लिए और क्या सरफ़राज़ी हो सकती है कि उनकी बेटी को काशानए नबुव्वत की शमए फ़रोज़ाँ बनने की सआदत नसीब हुई। हज़रत उम्मे रूमान इबादत गुज़ार, शब ज़िंदह दार, साइमुन्नहार, बाअख़्लाक़ व हौसिलह मंद ख़ातून थीं। नमाज़ बहुत दिल लगाकर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ पढ़ा करती थीं ख़ुद ही फ़रमाती हैं कि एक रोज़ मैं नमाज़ पढ़ रही थी कि मेरे सरताज घर तशरीफ़ लाये मुझे नमाज़ की हालत में देखकर फ़रमाया नमाज़ के दौरान जिस्म पुरसुकून रहना चाहिए जिस्म का पुरसुकून रहना नमाज़ की तकमील का बाइस बनता है।

नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिहाई दरजह एहतराम किया करते थे। हज़रत उम्मे रूमान भी रसूले पाक की ख़ुशी को हद दरजह मुक़द्दम रखतीं हज़रत उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा ६ हिजरी को वफ़ात पागईं उनकी क़ब्र में रसूले ग्रामी वक़ार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद उतरे और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की, बिला शुब्हा उम्मे रूमान के लिए यह बहुत बड़ा एज़ाज़ है आप ने उसे मौक़अ पर यह इरशाद फ़रमाया।

अगर कोई शख़्स जन्नत की हूर को देखना चाहता हो तो वह उम्मे रूमान को देखले अल्लाह तआला उनकी क़ब्र पर रहमत व नूर की बरसात फ़रमाये। (आमीन)

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिँव्वअला आलि सैयिद्दिना व मौलाना मुहम्मदिँव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।**

(६) हज़रते अस्मा बिन्ते अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हुमा

हज़रते अस्मा बिन्ते अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हिजरत से २७साल पहले मक्कह मुअज़्ज़मह में पैदा हुईं उस वक़्त अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र मुबारक सिर्फ़ २१साल की थी। वालिदह का नाम क़तीलह बिन्ते उज़्ज़ा था जिनसे ज़मानए जाहिलिय्यत में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शादी की और उनसे हज़रत अस्मा

और अब्दुल्लाह पैदा हुए, जुहूरे इस्लाम से पहले ही उसे तलाक़ देदी थी। एक अर्सह तक वह कुफ़्र व शिर्क में मुब्तिला रहीं लेकिन फ़तहे मक्कह के बअद इस्लाम की दौलते लाज़वाल से माला माल हो गईं हज़रते अस्मा अपने अब्बा जान की तेहरीक पर दामने इस्लाम में दाखिल हुईं आप को यह शर्फ़ हासिल है कि हज़रत अबू बकर की बेटी, रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़्वाहिरे निस्बती (साली) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु अन्हा की बहेन, सहाबिए रसूल हज़रत अबू क़हाफ़ह की पोती हवारिए रसूल और ज़बाने रिसालत से जन्नत की बशारत पाने वाले सहाबी ज़ुबैर बिन अवाम की शरीके हयात और जलीलुलक़द्र सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की वालिदह माजिदह हैं (रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन) हज़रत अस्मा सफ़रे हिजरत की राज़दाँ और सफ़रे हिजरत के लिए ज़ादे राह तैयार करने वाली वह ख़ुश नसीब सहाबियह हैं जिनके लिए आक़ाए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया में जन्नती होनी की बशारत दी, दीन व दानिश, अक़्लो फ़हेम, जुरअतो हिम्मत, जूदो सख़ा में अपनी मिसाल आप थीं, शुजाअत व बहादुरी का यह आलम था कि रात की तारीकी में अकेली ग़ारे सोर में खाना पहुंचातीं जहाँ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़रे हिजरत के दौरान हिफ़ाज़ती इक़दामात इख़्तियार करते हुए ठैहरे थे, क़ुरैशे मक्कह ने बहुत तलाश किया पकड़कर लाने वाले के लिए भारी इनआमात का एलान किया लेकिन कहीं सुराग़ न मिला। ख़ूब तलाश करने के बाद अबू जहल लईन ग़ैज़ व ग़ज़ब के आलम में हज़रते सिद्दीक़े अकबर के घर आया, हज़रते अस्मा से पूछा तुम्हारा बाप कहाँ है फ़रमाती हैं मुझे क्या मअलूम ज़ालिम अबू जहल ने एक ज़ोरदार तमांचह मुँह पर रसीद किया जिसकी वजह से कान की बाली नीचे गिर गई, अबू जहल के ज़ुल्म व सितम को पूरे सब्र व तहम्मुल के साथ बरदाश्त कर लिया। लेकिन राज़ छुपाए रख्खा, आपका लक़ब ज़ातुन्नताक़ीन है, ज़ादे सफ़र के थैले को बांधने के लिए जब कुछ न मिल सका तो आप ने अपने कमर बंद के दो हिस्से किए एक हिस्से से ज़ादे सफ़र के थैले का मुंह बाध दिया। निताक़ अर्बी लफ़्ज़ है इसका मअना कमर बंद होता है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपका यह ख़ुलूस और जज़्बह देखकर इरशाद फ़रमाया ऐ अस्मा यक़ीनन तुझे जन्नत में इसके बदले दो कमर बंद अता किए जायेंगे, जब हज़रते अस्मा का निकाह हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम से हुवा तो उनके पास रहने के लिए एक घर एक तलवार और एक घोड़ा था घोड़े की देखभाल करना और उसे चारह खिलाना, उन्हीं के ज़िम्मे था।

हिकमत व दानाई का यह आलम था कि जब आपके अब्बा जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़रे हिजरत पर

रवानह होगए तो दादा जान अबू क़हाफ़ह जिनकी बीनाई बुढ़ापे की वजह से ख़त्म हो चुकी थी उन्हें पता चला कि मेरा बेटा दाग़े जुदाई दे गया तो बहुत अफ़्सुरदह हुए हज़रते अस्मा से पूछा कि अख़्राजात के लिए कुछ दे गए हैं ? अर्ज़ करती हैं कि घरमें पांच छे हज़ार दीनार थे जिसे अब्बा जान साथ लेकर चले गए हैं लेकिन आप फ़िक्र बिल्कुल न करें अल्लाह तआला का दिया हुवा घरमें सब कुछ है किसी चीज़ की कमी नहीं है चूँकि वह नाबीना थे हज़रते अस्मा यह तदबीर इख़्तियार करती हैं कि घरमें एक गढा खोदकर उसमें दीनार के बराबर की ठेकरयाँ बनाकर रख दीं और एक कपड़ा डालकर ढक दिया फिर दादाजान का हाथ पकड़ कर कहा चलिए आप अपने हाथ से टटोलकर देख लीजिए कि घरमें कितने दीनार हैं चुनांचह जब हाथ फेरा तो उन्हें महसूस हुवा कि बहुत सारे दीनार रख्खे हुए हैं और ख़ुश होकर कहने लगे कि मेरे बेटे ने बड़ी अक़्लमंदी और हमदरदी का सुबूत दिया है हालांकि घरमें एक फूटी कौड़ी तक न थी जो कुछ था अबू बकर राहे ख़ुदा में लुटाने के लिए अपने साथ लेकर चले गए थे आपकी हिम्मत व शुजाअत और सब्र व रज़ा की एक कहीनी और सुनिए।

आपके साहिबज़ादे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्कह मुअज़्ज़मह में मुंतक़िल होने के बाद जब बनू उमैयह की ख़िलाफ़त को तसलीम करने से इन्कार किया और अपनी ख़िलाफ़त का एलान फ़रमाया चूंकि आप साहिबे इल्म व फ़ज़्ल थे सारे लोग आपकी शुजाअत व जवांमरदी के क़ाइल थे इस लिए बेचूनों चरा अक्सरियत ने आपकी ख़िलाफ़त को क़ुबूल कर लिया, लेकिन जब अब्दुल मलिक बिन मरवान तख़्त नशीं हुवा तो उसने बअज़ सूबों पर क़ब्ज़ह जमा लिया और हज्जाज बिन यूसुफ़ जैसे ज़ालिम, ख़ूंख़्वार को अपना नुमाइन्दह बनाकर हज्जाज की तरफ़ भेजा, हज्जाज ने शाही फ़ौजों की क़यादत करते हुए मक्कह मुअज़्ज़मह का मुहासिरह करलिया, ख़ूँरेज़ जंग शुरूअ होगई, हज़रते अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर अपनी वालिदह माजिदह के पास आये सलाम अर्ज़ की, हाल पूछा फ़रमाया बेटा बीमार हूँ अर्ज़ की अम्माँ जान मरने के बअद आराम मयस्सर होता है हज़रते अस्मा अपने लाडले बेटे की बात पर मुस्कुरा देती हैं और कहती हैं मेरे लाल जीते रहो ! क्या मेरी मौत की तमन्ना है ? मैं अभी मरना नहीं चाहती मैं अब तुम्हारा अंजाम देखना चाहती हूँ अगर तुम्हें शहादत नसीब होगी तो मैं सब्र करूँगी और अगर दुश्मन पर ग़ालिब आगए तो ख़ुशियों का इज़्हार करूँगी फिर क्या था हज़रते अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर अपने साथियों के साथ हज्जाज के लशकर पर टूट पड़ते हैं लेकिन हज्जाज के फ़ौजी ज़्यादह थे, उनकी तलवारें ज़हरों में बुझी हुई थीं उनके नेज़ों के फल ताज़ह थे, उनकी कमानें दूर तक तीर फेंकने वाली थीं हज़रते अब्दुल्ला बिन ज़ुबेर के फ़ौजी हज्जाज के

तेज़ हमलों का दिफ़ाअ न करसके और पीछे वापस होने लगे हज़रते अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर सूरते हाल को देखकर अपनी वालिदह की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं अर्ज़ करते हैं अम्माँ जान क्या हुक्म है ? क्या हथियार फेंक दूँ ? इरशाद फ़रमाया अब्दुल्लाह तुम हक़ पर हो जान की परवाह न करो कहते हैं कि मुझे ख़ौफ़ है कि यह लोग क़त्ल करके मेरे जिस्म के टुकड़े कर डालेंगे फ़रमाया बेटा जब बकरी ज़बह हो जाती है तो उसकी खाल उतरने से उसे कोई तक्लीफ़ नहीं होती जाओ और जाकर हक़ की सर बलंदी के लिए क़ुरबान हो जाओ चुनांचह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर वापस पलटकर पूरे जोश व जज़्बह के साथ दुश्मनों पर यलग़ार करते हुए जामे शहादत नोश फ़रमा लेते हैं। ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उनकी लाश को सूली पर उल्टा लटका दिया तीसरे दिन हज़रते अस्मा अपने मज़लूम शहीद बेटे को देखने आईं कनीज़ के तअव्वुन से लाश को हाथ लगाई और फिर आह भरते हुए कहा मेरे लाडले सवार का अभी घोड़े से उतरने का वक़्त नहीं आया ? मुख़्तसर यह कि बड़े सब्र व इस्तिक़लाल से इस सदमें को बरदाश्त कर लिया हज्जाज बिन यूसुफ़ ने देखा कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर की वालिदह लाश के पास खड़ी हैं आदमी भेजकर बुलवाया, आप ने इन्कार कर दिया तीसरी मरतबह ख़ुद आया मगर आप निहायत ही बेबाकी के साथ हदीसे पाक पढ़ती हैं कि ऐ हज्जाज ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया था कि बनू सक़ीफ़ में एक झूटा और ज़ालिम पैदा होगा तो वह आज मैं तेरी शक्ल में देख रही हूँ तूने मेरे बेटे का दुनिया बिगाड़ा है मगर तेरी आख़िरत बरबाद हो चुकी है मैं तेरे वजूद को ख़ुदा की इस ज़मीन पर बोझ और मनहूस समझती हूँ, हज्जाज इन कलिमात को सुनकर वापस मुड़ा और चला गया। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा सौ साल की उम्र पाकर ७३ हिजरी में इस दुनिया से रुख़सत हो जाती हैं ख़ुदा उनके सदक़े में क़ौमे मुस्लिम की औरतों की बख़्शिश फ़रमाये और उनके नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिँव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिँव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।**

(७) हज़रते सुमैयह बिन्ते ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हा

जिन सात अफ़राद ने सबसे पहले नूरे इस्लाम से अपने दिलों को मुनौवर किया उनमें एक नाम हज़रत सुमैयह बिन्ते ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हा का भी आता है यह हज़रत हुज़ैफ़ह की कनीज़ थीं यमन से आने वाले यासिर पर शफ़क़त व हमदरदी का मुज़ाहिरह करते हुए सुमैयह की शादी यासिर

के साथ करदी और हज़रत हुज़ैफ़ह ने उन्हें अपनी ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया हज़रत सुमैयह बड़ी नेक और सलीक़ह मंद सहाबियह थीं।

कुरैशे मक्कह ने इस्लाम लाने वालों पर तरह तरह के ज़ुल्म व सितम ढाये और उन्हें इस्लाम से दूर करने की कोशिश करते लेकिन फ़रज़ंदाने इस्लाम हर जफ़ा व हर सितम को बरदाश्त करते, कुफ़्फ़ारने मक्कह के ज़ुल्म व सितम की चक्की में पीसे जाने वालों में हज़रत सुमैयह और उनके शौहर यासिर और बेटा अम्मार भी शामिल थे, एक बार दोबार नहीं कई मरतबह कुरैशे मक्कह ने उन्हें तख़्तए मश्क़ बनाया मगर हर बार नाकामी हुई एक दफ़अ का वाक़िअह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्कह के बाज़ार से गुज़र रहे थे देखा कि कुरैश तीनों हज़रात को बेतहाशह मार रहे हैं, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया ऐ आले यासिर सब्र करो तुम्हारा ठिकानह जन्नत है।

अबू जहल लईन ने जो इस उम्मत का फ़िरऔन गुज़रा है हज़रत सुमैयह रज़ियल्लाहु अन्हा को दर्दनाक सज़ा दी लेकिन वाह रे सुमैयह तेरे अज़्म व हौसिलह को लाखों करोड़ों सलाम, पाए इस्तिक़लाल में ज़र्रह बराबर लग़ज़िश न आई चट्टान की तरह मज़बूत रहीं अबू जहल ने बहुत कोशिश की कि सुमैयह दीने इस्लाम से अलग हो जायें बुतों की पूजा शुरूअ करदे लेकिन उसे हर बार मायूसी हुई हर बार उन्होंने अबूजहल की बात मानने से साफ़ साफ़ इन्कार कर दिया अबू जहल ने ग़ज़बनाक होकर दो ऊँट मंगवाये दोनों को दो सिमतों में खड़ा कर दिया और हज़रत सुमैयह की एक टाँग एक ऊँट के पाँव में दूसरी टांग को दूसरे ऊँट के पाँव से बांधकर कहने लगा सुमैयह अब भी सवेरा है, दामने इस्लाम को छोड़दे वरनह अपने अंजाम को देखले हज़रते सुमैयह फ़रमाती हैं ओ ज़लील इन्सान तू इस्लाम की चाशनी और ख़ुदाये वाहिद की बंदगी की लज़्ज़तों से आशना नहीं तुझे जो करना है करले कि दीदारे इलाही का वक़्त क़रीब आगया है इस से बढ़कर मेरे लिए और सआदत क्या हो सकती है कि ज़मीन व आसमान पैदा करने वाले के नाम लेने के जुर्म में मुझे दर्दनाक अज़ाब दिया जा रहा है चुनांचह उस बदबख़्त के हुक्म से ऊँटों को दो सिमतों में दौड़ा दिया गया और ख़ुद अबू जहल ने हज़रत सुमैयह के दिल पर ज़ोर से नेज़ह मारा कि जिस्म के दो टुकड़े हो गए और तारीख़े इस्लाम ने अपने सीने पर इस्लाम की पहली शहीद ख़ातून का नाम महफ़ूज़ कर लिया।

अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में उनकी क़ब्र पर रहमत की बरखा बरसाये और उनके तुफ़ैल हम सबके गुनाहों को बख़्श दे । (आमीन)

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला**

सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातंव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।

(८) हज़रते उम्मे सुलेम अंसारियह बिन्ते मलहान रज़ियल्लाहु अन्हा

जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रते अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अनहु की वालिदह माजिदह, रिश्तह में दोनों आलम के ताजदार नाइबे परवरदिगार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ालह साहाबिए रसूल हज़रते हेराम बिन मलहान की बहेन जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल करने में बड़ी हिम्मत व जुरअत का मुज़ाहिरह किया जिनके ख़ाविंद मालिक बिन नुज़र ने हज़ार जतन किए कि मेरी बीवी इस्लाम छोड़दे लेकिन ऐसा न हो सका, हालात नामवाफ़िक़ होने के बावजूद अपने बेटे अनस बिन मालिक को कलिमए हक़ की तलक़ीन करते हुए इस्लाम में दाख़िल होने की रग़बत दिलाती रहीं यहाँ तक कि अपने इस मिशन में कामयाब हो गईं, जब ख़ाविंद ने कहा कि तू बेदीन हो गई तो जवाब दिया तुम जाहिल और गंवार हो, बेदीन हो, मैंने तो सच्चा दीन हासिल करके सआदते दारैन हासिल करली है शौहर ने कहा तू मेरे बेटे को ख़राब और बेदीन कर रही है आप ने जवाब दिया इसे बेदीनी और ख़राबी का नाम देकर मेरे मज़हब का मज़ाक़ न उड़ाओ मैंने तो अपने बेटे को सीधी राह का पता बता दिया है जहाँ ख़ैर ही ख़ैर है, इतनी ख़ूबियों की मालिक जन्नती नेक बख़्त ख़ातून का नाम है हज़रते उम्मे सुलेम अंसारियह बिंते मलहान रज़ियल्लाहु अनहा, अंसारी औरतें रमलह और सहलह के नाम से पुकारती थीं, लेकिन उम्मे सुलेम कुन्नियत नामों पर ग़ालिब आगई और तारीख़े इस्लाम ने इसी मुबारक नाम से उनका तज़किरए जमील किया है।

ख़ाविंद जो दुनियाए कुफ़्र में था नाराज़ होकर मुल्के शाम चला गया तो उम्मे सुलेम ने अपने बेटे अनस बिन मालिक को दरे मुस्तफ़ा पर भेजकर दुआ की दरख़्वास्त की कि मेरे बेटे को ज़्यादह इल्म और ज़्यादह माल व दौलत अता हो और साथ ही साथ अपने बेटे को सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया, पहले ख़ाविंद मालिक बिन नुज़र के इंतिक़ाल हो जाने के बअद मालदार ख़ूबरू, कड़ियल जवान अबू तलहा ने निकाह का पैग़ाम भेजा अबू तलहा अपने क़बीले के सरदार थे लेकिन अभी दौलते ईमान से महरूम थे उम्मे सुलेम ने जवाब दिया मैं मुसलमान हूँ और तुम काफ़िर हो बुतों की पूजा करते हो तुम कैसे इंसान हो अपने हाथों से बनाई हुई मूर्तियों की पूजा करते हो

और कभी ज़मीन से उगे हुए दरख़्तों की, कभी तुमने सोचा भी कि बेजान मूर्तियाँ, घास, पौदे जो ख़ुद मजबूर हैं तुम्हारी मुश्किल में मदद कैसे कर सकते हैं ? उम्मे सुलेम की हकीमाना बातें सुनकर अबू तलहा लाजवाब हो गए लेकिन उम्मे सुलेम की सलीक़ह शिआरी और मिहरो वफ़ा की दास्तानें जो सुन रख्खे थे उसकी वजह से उम्मे सुलेम को हासिल करने के लिए हर मुमकिन कोशिश करने लगे आख़िर कार दिलके हाथों मजबूर होकर एक दिन फिर अबू तलहा ने पैग़ामे निकाह पेश कर दिया, उम्मे सुलेम ने फ़रमाया कि ऐ अबू तलहा तुम्हारे इस पैग़ाम को क़ुबूल करने में जो मजबूरी थी उससे तुम्हें आगह कर दिया है मेरा रिशतह नाता इस्लाम से है और मेरी ज़िन्दगी इस्लाम के नाम पर क़ुरबान है तुम अभी कुफ़्र के अंधेरे में हो तुम्हारा रास्तह गुमराहियत का है जहाँ लम्हा लम्हा मायूसी और अंजाम जहन्नम है इस लिए मुझे तुम्हारे साथ रिशतए निकाह मंज़ूर नहीं है, अबू तलहा ने कहा उम्मे सुलेम अगर मैं इस निअमत से अपनी ख़ाली झोली भर लूँ और अपनी ज़िंदगी इस्लाम के सांचे में ढाल लूँ तो ? उम्मे सुलेम ने जवाब दिया यही मेरी मर्ज़ी और यही ख़्वाहिश है अगर तुम इस अबदी सआदत को हासिल कर लोगे तो तुम्हारी पेशकश बख़ुशी क़ुबूल करलूँगी बल्कि तुम्हारे इस्लाम लाने को ही अपना महेर तस्लीम करलूँगी इस लिए कि दिरहम व दीनार से कहीं अफ़ज़ल मेरे लिए तुम्हारा इस्लाम क़ुबूल करना होगा। अबू तलहा इंतिहाई सआदत मंदी का सुबूत देते हुए कलिमए शाहदत पढ़कर इस्लाम में दाख़िल होजाते हैं। उम्मे सुलेम ने अपने बेटे अनस बिन मालिक से कहा कि अबू तलहा से मेरे निकाह का एहतिमाम करो चुनांचह एक सादह तक़रीब में अबू तलहा के साथ उम्मे सुलेम का निकाह हो जाता है और ज़िंदगी हैरत अंगेज़ तौर पर ख़ुशगवार हो जाती है अबू तलहा का बयान है उम्मे सुलेम से शादी होजाने के बअद हर रोज़ ईद और हर शब शबे बरात की तरह गुज़रने लगे और यह तबदीली सिर्फ़ उस महेर की बरकत से हुई जो उम्मे सुलेम ने अपने लिए मुक़र्रर किया था।

अबू तलहा से निकाह के बअद उम्मे सुलेम के बतन से पहला बेटा पैदा हुवा जिसका नाम उमैर था कुछ अर्से के बअद अबू उमैर बीमार रहने लगा और बुख़ार इतनी शिद्दत इख़्तियार कर गया कि अबू उमैर का इंतिक़ाल होगया अबू तलहा उस वक़्त बाहर थे उन्हें ख़बर न होसकी उम्मे सुलेम सब्र व रज़ा का मुज़ाहिरह करते हुए ख़ामोशी इख़्तियार कर लेती हैं और किसी को भी अपने बेटे के इंतिक़ाल की ख़बर न होने दी अबू तलहा जब घर वापस आये तो पूछा बेटे का क्या हाल है ? बड़े इतमीनान से जवाब दिया कि पहले से ज़्यादह आराम में है उसके बअद अबू तलहा के साथ बड़े सुकून से खाना तनावुल किया और रोज़ानह से ज़्यादह ज़ेब व ज़ीनत (मैकअप) करके माहौल को ख़ुशगवार बनाया और फ़रीज़ए

अज़्दवाजियत से फ़रागत हासिल की जब रात ज़्यादह गुज़र गई तो उम्मे सुलेम ने अबू तलहा से अर्ज़ की कि अगर तुम्हारे पास किसी की अमानत रख्खी हो और वह शख़्स अपनी अमानत वापस मांगे तो क्या उसे आमनत वापस करदेनी चाहिए ? फ़रमाया हाँ उम्मे सुलेम यह उसका हक़ है उसे बख़ुशी वापस लौटा देना चाहिए उम्मे सुलेम अबू तलहा को साथ लेकर उस जगह आती है जहाँ उनका बेटा अबदी नींद सोया हुवा था, चेहरे से चादर उठाई और लरज़ती हुई आवाज़ में कहा हमारे पास अल्लाह की अमानत थी जो उसने वापस ले ली है, अबू तलहा यह माहौल और मंजर देखकर काँप उठते हैं और लरज़ती हुई आवाज़ में कहते हैं कि तूने मुझे घरमें दाख़िल होते ही क्यों नहीं बताया ? सुबह को बारगाहे रसूल में हाज़िर हुए ग़ैब की ख़बरें बताने वाले सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू तलहा को देखते ही इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला तुम्हारे रात के कारनामे से बहुत ख़ुश है, फिर मियाँ बीवी के हक़ में दुआ की जिसकी बरकत से ख़ूबसूरत बेटा पैदा हुवा उसका नाम अब्दुल्लाह रख्खा अब्दुल्लाह जब जवान हुए शादी हुई तो उनसे सात बेटे पैदा हुए जो सबके सब हाफ़िज़े क़ुरआन हुए।

एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम अबू तलहा के घर तशरीफ़ लाये बिस्तर पर आराम फ़रमाने लगे गर्मी का मौसम था आपका पसीनए मुबारकह बह रहा था हज़रते उम्मे सुलेम उसे एक बरतन में जमअ कर लेती हैं जब सरकार ने पूछा ऐ उम्मे सुलेम इसे क्या करोगी ? जवाब दिया ऐ मेरे आक़ा बतौरे तबर्रुक इस्तेमाल करूंगी आप ने फ़रमाया ठीक हैं तुम अच्छा काम कर रही हो उस पसीने में इतनी ख़ुशबू थी कि दुल्हनों को सजाने में इत्र की जगह उसी को इस्तेमाल करती थीं उसी की तरजुमानी बरेली के इमाम मुजद्दिदे आज़म सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु अनहु यूँ फ़रमाते हैं

वल्लाह जो मिल जाये मेरे गुल का पसीनह
मांगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

मरने से पहले वसिय्यत करती हैं कि जिस पानी से मुझे ग़ुस्ल दिया जाये उसमें इस पसीने के चंद क़तरें मिला लिए जायें हज़रते अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अनहु बयान करते हैं कि आक़ाये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी वालिदह माजिदह के जन्नती होने की बशारत दी बिला शुब्हा यह सआदत क़ाबिले फ़ख़्र व रश्क है परवरदिगारे आलम उनके तुफ़ैल में सबको जन्नत में जगह अता फ़रमाये (आमीन)

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातँव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।**

(९) हज़रते उम्मे अम्मारह नसीबह बिंते कअब रज़ियल्लाहु अनहा

शहरे मदीनह में से अंसार के वह हज़रात जो हज़रते मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अनहु की दअवत पर लब्बैक कहते हुए दीने इस्लाम में दाख़िल हुए थे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्ते हक़ पर दूसरी मरतबह बैअत के लिए आने वाले ख़ुश नसीब कारवाँ में (७२) मर्दों के साथ दो औरतें भी शामिल थीं उन दो औरतों में एक हज़रते अम्मारह रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। बैअत हासिल करने के बअद मदीनह मुनव्वरह वापस लौटीं और ख़्वातीने इस्लाम की तअलीम व तरबियत में मसरूफ़ हो गईं उम्मे अम्मारह की पहली शादी ज़ैद बिन आसिम माज़नी से हुई जिससे दो लड़के हज़रते अब्दुल्लाह और हज़रते हबीब रज़ियल्लाहु अन्हुमा पैदा हुए दोनों सहाबियत के मंसब से सरफ़राज़ हुए, दूसरी शादी ग़ज़्यह बिन अम्र माज़नी से हुई जिससे एक लड़का तमीम और एक लड़की ख़ूलह पैदा हुए यह पूरा ख़ान्दान इस्लाम की बरकतों से माला माल हुवा हज़रते उम्मे अम्मारह रज़ियल्लाहु अन्हा बैअते अक़बए सानियह, ग़ज़वए उहद, सुलहे हुदैबियह, ग़ज़वए हुनैन, जंगे यमामह में शरीक हुईं, ग़ज़वए उहद में पानी का मशकीज़ह उठाए दौड़ दौड़कर ज़ख़्मियों को पानी पिलाती रहीं और उनकी मरहम पट्टी करने के इलावह तलवार के वह जौहर दिखलाती हैं कि देखने वाले हैरान रह गए ख़ुद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ग़ज़वए उहद में जिस तरफ़ मेरी निगाह उठती दायें, बायें उम्मे अम्मारह दिखाई पड़ती और उन्हें मेरा दिफ़ाअ करते हुए मुसलसल तलवार चलाते हुए पाया, उम्मे अम्मारह कहती हैं कि ग़ज़वए उहद में जब मुजाहिदीन कमज़ोर दिखाई देने लगे और बिखर गए उस वक़्त मेरे शौहर और दोनों बेटे अब्दुल्लाह और हबीब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिफ़ाअ के लिए उठ खड़े हुए और हर तरफ़ से हमले का जवाब देने लगे, मेरे दाहिने हाथ में तलवार थी और बायें हाथ में ढाल थी अगर दुश्मन घोड़ों पर सवार न होते तो उनमें से कोई भी बचकर न जाता।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि ग़ज़वए उहद में अपनी वालिदह के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब हुवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब्दुल्लाह दुश्मन पर हमलह करो मैंने सामने आने वाले दुश्मन पर पत्थर से हमलह किया जो सीधा उसके घोड़े की आँख पर लगा जिस से घोड़ा तड़प कर सवार समेत ज़मीन पर गिर पड़ा मैंने दूसरा पत्थर फेंक कर उसका काम तमाम कर दिया यह मंज़र देख कर सरकार मुस्कुराए

इरशाद फ़रमाया अब्दुल्लाह तुम्हारी वालिदह के कंधे से ख़ून बह रहा है उनकी मरहम पट्टी करो और साथ ही यह भी इरशाद फ़रमाया तुम्हारा पूरा ख़ान्दान बड़ा अज़ीम है अल्लाह तुम सब पर अपनी रहमतों का नुज़ूल फ़रमाये, उसके बअद दुआ फ़रमाते हैं। ऐ अल्लाह इस ख़ान्दान को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना, सुबहानल्लाह यह दुआ सुनकर उम्मे अम्मारह और उनके बेटे मचल उठते हैं और उनके जोश व जज़्बह में बेपनाह इज़ाफ़ह हो जाता है दुश्मनों पर दीवानह वार हमले करना शुरूअ कर देते हैं यहाँ तककि अब्दुल्लाह बिन ज़ैद एक मुश्रिक के हाथ सख़्त ज़ख़्मी हो जाते हैं ख़ून के फ़ौवारे जारी हो जाते हैं उम्मे अम्मारह अपने बेटे की मरहम पट्टी करने के बअद फ़रमाती हैं अब्दुल्लाह उठो हिम्मत करो और दुश्मन पर हमलह करो फिर ख़ुद ही बरहनह तलवार लिए मैदान में कूद पड़ती हैं देखा सामने वही मुश्रिक आरहा है जिसने आप के बेटे को ज़ख़्मी किया था हज़रते उम्मे अम्मारह ने एक ऐसा ख़तरनाक वार किया जिससे उसकी टाँग कट गई और मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा चंद मुजाहिदीन ने उसे पकड़ लिया मगर वह वासिले जहन्नम हो गया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी बहादुरी को देखकर इरशाद फ़रमाते हैं उम्मे अम्मारह तुम ने कमाल कर दिया अल्लाह का शुक्र है कि तुम्हें कामयाबी मिली दुश्मन ज़ेर हुए तेरी आँखों को ठंडक पहुँची और तूने अपना बदलह अपनी आंखों से देख लिया। ग़ज़वए उहद में इस्लाम की इस अज़ीम ख़ातून के जिस्म पर तक़रीबन बारह ज़ख़्म आये जिनमें कंधे का ज़ख़्म ज़्यादह गैहरा था और यह ज़ख़्म लगाने वाला इब्ने क़ैमियह नामी काफ़िर था आप बेहोश हो गईं और जब होश आया तो सबसे पहले पूछा कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैसे हैं ? यह है उस नेक बख़्त बीवी का ईमान कि न शौहर को पूछा न बेटे को जब मअलूम हुवा कि आप ख़ैरियत से हैं और महफ़ूज़ हैं तो अल्लाह का शुक्र अदा किया और जंगे यमामह जो हज़रते ख़ालिद बिन वलीद की क़यादत में मुसैलेमह किज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ लड़ी गई उसमे भी शरीक होकर दादे तहसीन हासिल करती हैं इस जंग में लड़ाई के दौरान आपका एक हाथ कट गया और जिस्म पर ग्यारह ज़ख़्म आये और आपके बेटे हबीब बिन ज़ैद अंसारी मुसैलेमह किज़्ज़ाब के हाथों शहीद हुए।

हज़रते उम्मे अम्मारह को अपने बाज़ू कटने का इतना ग़म न था जितनी ख़ुशी दुश्मने इस्लाम मुसैलेमह किज़्ज़ाब के क़त्ल होने की थी। दूसरे बेटे अब्दुल्लाह बिन ज़ैद मअरकए हुर्रह में शहीद हुए यह जंग ६३ हिजरी में मदीनह मुनव्वरह के पूरबी जानिब वाक़ेअ सियाह पहाड़ियों में लड़ी गई जंगे यमामह के बअद हज़रते उम्मे अम्मारह रज़ियल्लाहु अन्हा

अगरचेह जज़्बए जिहाद से सरशार थीं मगर गैहरे ज़ख़्मों की वजह से कोशिश के बावजूद किसी और जंग में हिस्सह न ले सकीं और कुछ दिन ज़िन्दह रहने के बअद अल्लाह को प्यारी हो गईं, अल्लाह उनकी तुर्बत पर रहमत व नूर के फूल बरसाये (आमीन)

दरूद शरीफ़ पढ़िए : **अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्वअला आलि सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम अलैहि सलातंव्वसलामन अलैका या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।**

(१०) हज़रते राबिअह बसरियह रहमतुल्लाहि अलैहा

अल्लाह तआला की महबूब और नेक बंदी हज़रते राबिअह बसरियह रहमतुल्लाहि अलैहा जिस रात में पैदा हुईं तो ग़ुर्बत की वजह से न घर में तेल था जिससे घरमें रोशनी की जा सके और नाफ़ पर मालिश किया जासके और न इतना कपड़ा था जिसमें आप को लपेटा जा सकता आप वालिदैन की चौथी औलाद थीं इसी लिए आपका नाम राबिअह रख्खा गया, वालिदह आलमे परेशानी में अपने शौहर से कहती हैं जाके कहीं पड़ोसी ही से थोड़ा सा तेल ले आइए ताकि घरमें उजाला तो हो सके हज़रते राबिअह के वालिदे मोहतरम बहुत इसरार के बअद पड़ोसी के मकान पर पहुँचे दरवाज़ह पर सिर्फ़ हाथ रख्खा और वापस आकर घर में कह दिया कि पड़ोसी दरवाज़ह नहीं खोलता क्योंकि आप यह अहेद कर चुके थे कि अपना हाथ सिर्फ़ ख़ुदा के सामने फैलाऊँगा और किसी से कुछ न माँगुंगा इसी परेशानी में नींद आगई तो मुक़द्दर का सितारह जगमगा उठा और दोनों जहान की निअमतें उनके घरमें आ गईं कि ग़रीबों के ग़मगुसार, बेबसों के बस, हाजत मंदों के हाजत रवा सरकारे बतहा जनाबे मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़्वाब में ज़्यारत हो जाती है आप ने फ़रमाया परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं बच्ची की सूरत में तुम्हारे घरमें बेशुमार ख़ैर व बरकत का नुज़ूल हो चुका है यह बच्ची बहुत ही बलंद मक़ाम हासिल करेगी और इसकी शफ़ाअत से मेरी उम्मत के हज़ारों गुनहगार बख़्श दिए जायेंगे इसके बअद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बसरह के हाकिम के पास काग़ज़ पर लिखकर ले जाओ कि तू रोज़ानह मुझपर एक सौ मरतबह दरूद शरीफ़ भेजता है और जुमअ की रात में चार सौ मरतबह लेकिन आज जुमअ की जो रात गुज़री है उसमें दरूद पढ़ना भूल गया, लिहाज़ा बतौरे कफ़्फ़ारह हामिले रुक़्क़अ को चार सौ दीनार देदे सुबह उठकर ख़त

तहरीर करके दरबान के हाथ वालिए बसरह के पास भेज दिया उसने ख़त पढ़ते ही हुक्म दिया कि मरहबा मरहबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याद आवरी के शुकराने में दस हज़ार दिरहम फ़क़ीरों में बांट दो और चार सौ दीनार इस आदमी को देदो, उसके बअद बसरह का हाकिम तअज़ीमन ख़ुद आप से मुलाक़ात करने आप के घर पहुँचा और इंतिहाई आजिज़ी के साथ अर्ज़ किया कि जब भी आप किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस करें मुझे ख़बर भेजवा देना इंशाअल्लाह तुम्हारी ज़रूरियात पूरी करता रहूंगा, हज़रते राबिअह बसरियह के वालिद माजिद चार सौ दीनार लेकर बाज़ार जाते हैं और ज़रूरियात का तमाम सामान ख़रीद लेते हैं।

हज़रते राबिअह बसरियह ने जब होश संभाला तो वालिद का सायह सर से उठ चुका था और ग़ुरबत व इफ़्लास की वजह से आपकी बहनें भी आपसे अलग होकर न जाने कहाँ तक़सीम हो गईं चारों तरफ़ निगाह दौड़ाने के बअद अल्लाह का नाम लेकर एक तरफ़ को चल दीं मगर एक ज़ालिम ने पकड़कर ज़बरदस्ती अपनी कनीज़ बना लिया और कुछ दिनों के बअद बहुत थोड़ी रक़म लेकर आपको दूसरे के हाथ फ़रोख़्त कर दिया वह शख़्स अपने घर लाकर ज़्यादह मेहनत वाला काम आपसे लेने लगा एक मरतबह का वाक़िअह है कि आप कहीं जारही थीं कि सामने एक ग़ैर महरम आ गया, शर्म व हया की वजह से इतनी तेज़ भागती हैं कि ज़मीन पर गिर गईं जिसकी वजह से आप का हाथ टूट गया, दर्द से तड़प उठती हैं, बारगाहे ख़ुदा वंदी में सर झुका कर अर्ज़ करती हैं कि ऐ मेरे परवरदिगार तेरी बंदी पहले ही से बेयार व मददगार थी और अब हाथ भी टूट चुका है मगर मैं तेरी रज़ा चाहती हूँ अगर तेरी रहमतें मुतवज्जह हो जायें तो फिर मेरी हर मुश्किल आसान हो जाये चुनांचह ग़ैब से निदा आई ऐ राबिअह रंजीदह मत हो तुम्हें वह मरतबह हासिल होगा कि मुक़र्रब फ़रिशते भी तुम पर रश्क करेंगे यह सुनकर ख़ुशी ख़ुशी अपने मालिक के घर पहुँच गईं। हज़रते राबिअह बसरियह का रोज़ का यह मअमूल रहा कि दिन में रोज़ह रखतीं और रात भर अल्लाह तआला की इबादत में मसरूफ़ रहतीं एक रात का वाक़िअह है कि मालिक की आंख खुली तो चारों तरफ़ देखने लगा कि राबिअह कहाँ ग़ायब हो गईं लेकिन जब उसकी निगाह एक गोशह में पड़ती है तो उसकी हैरत की इंतिहा न रही, देखा कि राबिअह सजदह में है और उसके सर पर एक नूर फ़रोज़ाँ है और उसके कानों ने सुना कि राबिअह अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ कर रही हैं कि ऐ हाकिमों के हाकिम, ख़ालिक़े दो जहाँ तूने मुझे ग़ैर की मिल्कियत में दे दिया वरनह हर वक़्त तेरी इबादत में मसरूफ़ रहती ऐ अल्लाह मैं तेरी बारगाह में देर से हाज़िर हुई हूँ मुझे ग़ैर के क़ब्ज़ह से आज़ाद फ़रमाकर सिर्फ़ अपनी बंदी बना ले राबिअह का आक़ा यह सुनकर घबरा उठा और दिल ही दिल में

अहेद कर लिया कि मैं सुबह होते ही इस अल्लाह की बंदी को आज़ाद कर दूँगा मुझे तो खुद इनकी ख़िदमत करनी चाहिए, चुनांचह सुबह होते ही मालिक ने आप को आज़ाद कर दिया और यह दरख़्वास्त भी की कि आप कहीं और न जाकर यहीं क़याम फ़रमायें तो मेरे लिए बाइसे सआदत होगी और अगर आप जाना चाहें तो इख़्तियार है यह सुनकर आप हुजरह से बाहर निकल आईं और इबादते इलाही में मसरूफ़ हो गईं। तज़किरतुल औलिया में लिखा है कि एक मरतबह हज़रते इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि जब सफ़रे हज पर रवानह हुए तो हर क़दम पर दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते हुए आगे बढ़ रहे थे इस तरह पूरे चौदह साल की मुद्दत में मक्कह मुअज़्ज़मह में दाख़िल हुए मगर जब कअबह शरीफ़ में दाख़िल हुए तो वहाँ ख़ानए कअबह को ग़ायब पाया, चुनांचह आलमे तसव्वुर में आबदीदह होकर अर्ज़ करते हैं कि ऐ परवरदिगारे आलम क्या मेरी आंखें ज़ाइल हो गईं हैं या कोई और हिकमत कार फ़रमा है तो निदा आई ऐ इब्राहीम बिन अदहम तुम्हारी बीनाई ख़त्म नहीं हुई है बल्कि कअबह एक ज़ईफ़ह, पारसा के इस्तक़बाल के लिए गया हुवा है यह सुनकर आप नादिम और शर्मिंदह हुए और अर्ज़ की ऐ अल्लाह वह कौनसी हस्ती है ? निदा आई कि वह बहुत अज़ीम मरतबे वाली मेरी नेक बंदी है निगाह उठी तो देखा कि सामने राबिअह बसरियह लाठी के सहारे चली आरही हैं और कअबह अपनी जगह पहुँच चुका है आपने राबिअह बसरियह से दरयाफ़्त किया कि तुमने निज़ाम को क्यों दरहम बरहम कर रख्खा है ? जवाब दिया मैंने नहीं अलबत्तह आपने एक हंगामह खड़ा कर रख्खा है जो चौदह बरस में कअबह तक पहुँचे हो हज़रते इब्राहीम बिन अदहम ने कहा मैं हर क़दम पर दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ता हुवा आया हूँ जिसकी वजह से ताख़ीर से पहुँचा, हज़रते राबिअह ने जवाब दिया तुमने तो नमाज़ पढ़कर यह सफ़र तय किया है और मैं इज्ज़ व इन्किसारी के साथ यहाँ तक पहुँची हूँ, आप बड़ी इबादत गुज़ार थीं रात व दिन में सौ रकअत नमाज़ अदा करती थीं यक़ीन व सब्र का यह आलम था कि एक मरतबह दो भूके शख़्स आप के महमान हुए और दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई कि अगर राबिअह इस वक़्त खाना पेश करदें तो बड़ा अच्छा होगा आपके यहाँ उस वक़्त दो रोटियाँ थीं वही उनके सामने रख दीं उसी वक़्त किसी साएल ने दरवाज़ह पर दस्तक दी तो आपने उन दो रोटियों को उसे दे दी महमान हैरत ज़दह हो गए लेकिन कुछ ही वक़्फ़ह के बअद एक कनीज़ गर्म गर्म रोटियाँ लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि यह मेरी मालिकह ने भेजवाई है आप रोटियों को शुमार करती हैं तो तअदाद अट्ठारह थीं आपने कनीज़ को यह कहकर वापस करदी कि शायद तुझको ग़लत फ़हमी हुई है, यह रोटियाँ मेरे यहाँ नहीं किसी और के घर भेजी गईं हैं कनीज़ के इसरार पर भी आप लेने से

इनकार कर देती हैं कनीज़ ने वापस जाकर अपनी मालिकह से वाक़िअह बयान किया मालिकह ने दो रोटियों का इज़ाफ़ह करके हुक्म दिया ले जाओ चुनांचह जब २० रोटियाँ लाई गईं जिसे दोनों महमानों के सामने रख्खा, महमान मुजस्समए हैरत बने खाना तनावुल करते हैं बअदे फ़राग़त वाक़िअह के बारे में मअलूम करना चाहा तो फ़रमाया कि जब तुम यहाँ पहुँचे तो भूके थे और जब दो रोटियाँ तुम्हारे सामने रख्खी गईं तो साइल ने सवाल कर दिया वह रोटियाँ मैंने उसे देकर अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया कि तेरा वअदह एक के बारे में दस देने का है और मुझे यक़ीन है कि तू एक के बदलह दस देगा चुनाँचह जब वह कनीज़ १८ रोटियाँ लेकर आई तो मैंने समझ लिया कि इसमें ख़ता हो गई है और जब वह पूरे बीस लेकर आई तो मैंने अल्लाह के वअदे के मुताबिक़ उसे क़ुबूल कर लिया। इस तरह बहुत से वाक़िआत किताबों में मज़कूर हैं ज़ुहदो तक़्वा सब्र व रज़ा का पैकर बनकर बड़ी सादगी के साथ अपनी ज़िंदगी गुज़ार देती हैं मशाइख़ीन का बयान है कि राबिअह ने ख़ुदा की बारगाह में कोई शिकायत न की और कभी सुख दुख की परवाह न की और न ही मख़्लूक़ से कुछ तलब किया यहाँ तककि अपने मालिके हक़ीक़ी से भी कभी कुछ नहीं माँगा और अनोखी शान के साथ इस फ़ानी दुनिया से रुख़सत हो गईं ख़ुदा सुब्हे क़यामत तक उनकी क़ब्र पर रहमतो नूर के फूल बरसाये और उनके सदक़े में हम सबका ख़ातिमह बिलख़ैर फ़रमाये। (आमीन)

मेरी प्यारी बहनों यह रिवायते सहीहा जो किताबों में दर्ज है बयान किए गए हैं हम सबपर लाज़िम है कि मज़कूरह बीबियों के नक़्शे क़दम पर चलें। अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े और इन नेक बीबियों के तुफ़ैल हम सबकी ख़तायें मआफ़ फ़रमाये। (आमीन)

तरीक़ए फ़ातिहा

दरूद शरीफ़ एक बार
क़ुल या अय्युहल काफ़िरून एक बार
क़ुलहु वल्लाहु अहद तीन बार
क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ एक बार
क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास एक बार
अलहमदु शरीफ़ एक बार
अलिफ़ लाम्मीम मुफ़्लिहून तक एक बार
व इलाहुकुम एक बार पढ़कर इस तरह दुआ करें।

या अल्लाह या रहमान या रहीम जो कुछ क़ुरआने अज़ीम की तिलावत की गई है दरूद शरीफ़ वग़ैरह पढ़ा गया है और जो नेक बीबियों के हालात बयान किए गए हैं और जो कुछ शीरीनी वग़ैरह मौजूद है इस

सब का सहीह तिलावत और तैयब व ताहिर नियाज़ का सवाब आक़ाये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे नाज़ में पेश करते हैं तू अपने फ़ज़्ल व करम से क़ुबूल फ़रमा बअदहू जुमलह अंबिया अलैहिमुस्सलाम, सहाबए किराम, ताबईन तबअे ताबईन तेरी बारगाह के सारे मक़बूल बंदों और बंदियों की अरवाहे पाक को इसका सवाब पेश करते हैं क़ुबूलियत अता फ़रमा मख़सूस तौर पर तेरे महबूब जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े दसों बीबियों की अरवाह को सवाब अता फ़रमा।

या अल्लाह अपने इन तमाम महबूब बंदों के सदक़े में बिलख़ुसूस मज़कूरह दसों बीबियों के वसीले से हम सबकी ख़ताओं को मआफ़ फ़रमा, हमें अपने अपने माँ बाप की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, और जिन जिन के वालिदैन इंतिक़ाल कर चुके हैं उनकी मग़फ़िरत फ़रमा, या अल्लाह हमारी क़ौम की औरतों को इस्लामी मआशिरह इस्लामी माहौल में ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, ग़ैर मर्दों से परदह में रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, नाचने, गाने, बजाने, खेल तमाशह से दूर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, बीमारों को शिफ़ा अता फ़रमा, बेऔलाद माँ और बहनों को नेक व सालेह औलाद अता फ़रमा, इलाही हम सबको सच्ची तौबह की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, या अल्लाह हम सबके जान व माल व आबरू की हिफ़ाज़त फ़रमा, हमारी दुआओं को क़ुबूल फ़रमा, हम सबका ख़ातिमह ईमान पर नसीब फ़रमा, या अल्लाह जिसने दस बीबी की कहानियाँ सुनने और सुनाने की महफ़िल सजाई है उसकी जाइज़ तमन्नायें पूरी फ़रमा तमाम आफ़ात व मुसीबत से महफ़ूज़ फ़रमा, हम सबके घर में ख़ैर व बरकत नाज़िल फ़रमा। **व सल्लल्लाहु तआला अला हबीबिहिल करीम व अला आलिही व असहाबिही अजमईन बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन।**

गुज़ारिश

अपनी दुआ में मेरे वालिदैन करीमैन हशमत अली साबरी व मरहूमह ज़ैबुन्निसा और मेरे बड़े भाई यार मुहम्मद मरहूम व मेरे ख़ालू मोलवी फ़रज़न्द अली मरहूम को भी शामिल फ़रमायें। अल्लाह आप को जज़ाये ख़ैर अता फ़रमाये। (आमीन)

सिराजुल क़ादरी बहरइची

लेखक मौलाना सिराजुल क़ादरी की दूसरी पुषतकें

- इस्लामी हीरे
- अनवारे क़ुरआनी
- पयामे रहमत
- बरक़े वहदत
- लुआबे दहने मुस्तफ़ा
- दश्ते करबला
- मुनाफ़िक़ीन
- क़ब्र से जन्नत तक
- तारीख़ी कहानियाँ
- गुस्ताख़ क़लम
- मुजरिम अदालत में
- बरक़े रज़वियत
- तोहफ़ए रमज़ान
- तोहफ़ए निकाह
- अन्धे नजदी देखले
- अस्हाबे कहफ़
- मक़ामे आला हज़रत
- असली सय्यदह बीबी की कहानी
- असली दस बीबियों की कहानी
- माँ का आंचल
- फातिहा हजरत इमाम जअफर सादिक

GHAZI KITAB GHAR

Gangwal Bazar, Distt. Bahraech (U.P.)

کوئز بک
۳۸۰۰ سے زائد سوالات کے جواب
اسلامی معلومات
کا
انسائیکلوپیڈیا
علامہ سراج احمد سراج القادری
نوری کتب خانہ۔ لاہور